Class. B. Com I
Subject BMC
Paper I (S)
Topic. Organisation
Lecture - 22
By Dr C P Sahu
Marwari College DAR

संगठन (Organisation)

①

किसी संस्था के उद्देश्यों के निर्धारण करने के लिए तथा प्रबन्ध करने के लिए व्यूह रचनाओं, नीतियों तथा कार्यक्रमों को बनाने के बाद प्रबन्ध प्रक्रिया के अन्तर्गत संगठन करना होता है। संगठन प्रबन्ध का वह यंत्र है जिसके द्वारा प्रबन्ध अपना कार्य करता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न क्रियाओं को समूहों में बाँटा जाता है।

परिभाषाएँ: - (Definitions)

एलन के अनुसार - "संगठन कार्यों को पूरा करने के लिए मानव को मिलकर प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करने योग्य बनाने के उद्देश्य से किये जाने वाले कार्य की पहचान तथा समूहबद्ध करने, उत्तरदायित्व तथा अधिकार की परिभाषा तथा सम्पादन करने तथा सम्बन्धों की स्थापना करने की प्रक्रिया है।"

प्रो० हैनी के अनुसार (Haney) "किसी सामान्य उद्देश्य या उद्देश्यों की प्राप्ति प्राप्त करने लिए विशिष्ट अंगों के मैत्रीपूर्ण समायोजन को संगठन कहते हैं।"

उर्विक के शब्दों में, "संगठन, किसी प्रयोजनवश आवश्यक क्रियाओं को विभाजित करना और व्यक्तियों को उन्हें सम्पादित करने के लिए उनका समूहों में व्यवस्थित करना है।"

मिलवर्ड के अनुसार - "कार्य और कर्मचारी समुदाय का मधुर संबंध संगठन कहलाता है।"

बरनार्ड के शब्दों में - "संगठन उस अवस्था में अस्तित्व में आता है जब सब व्यक्ति एक दूसरे के साथ विचार और संबंध स्थापित करते हैं एवं साथ ही सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि कंपनी, उद्योग या व्यवसाय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संगठन एक ओर तो विभिन्न कार्यों एवं क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है तथा दूसरी ओर कार्यरत व्यक्तियों के बीच मधुर संबंध स्थापित करने की कला है।"

Scanned with CamScanner

2

संगठन के विशेषताएँ - (1) यह एक प्रक्रिया है। (2) संगठन प्रबन्ध का एक यन्त्र है। (3) संगठन एक ढाँचा है। (4) संगठन एक प्रणाली (5) व्यक्तियों का समूह (6) संगठन सार्वभौमिक होते हैं। (7) संगठन एक साधन है, साध्य नहीं (8) संगठन उद्देश्यात्मक है।

संगठन के उद्देश्य या लक्ष्य :- (1) कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करना (2) संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोग (3) संगठन की प्रभावशीलता में वृद्धि करना (4) सामाजिक उद्देश्य (5) संसाधनों का मितव्ययी उपयोग। (6) श्रम तथा पूँजी में मधुर संबंध बनाना (7) स्थायित्व, सामाजवादी की स्थापना तथा देश में संतुलित विकास में सहायक

संगठन के महत्व एवं लाभ :- कुशल संगठन उद्देश्य प्राप्ति का वह यंत्र है जो उद्योग, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व की शांति प्रदान करता है। संगठन का प्रबन्ध में वही स्थान है जो मानव शरीर में हड्डियों के ढाँचे का अर्थात संगठन प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण कार्य है एक कमजोर संगठन अच्छे उत्पाद वस्तु को मिट्टी में मिला सकता है जबकि एक मजबूत संगठन कमजोर उत्पाद वस्तु को बाजार में ला सकता है। यदि वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार स्पष्ट, तर्कसंगत, सरल है तब प्रबन्ध की प्राथमिक आवश्यकता पूरी किया जा सकता है।

संगठन के महत्वों को निम्नलिखित तर्कों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) मानवीय प्रयासों का अनुकूलतम उपयोग - श्रम विभाजन, विशिष्टीकरण तथा नियंत्रण के विस्तार के बीच सन्तुलन स्थापित करके मानवीय साधन की लागत को कम करने में सहयोग देता है। सही व्यक्ति को सही कार्य मिलने से श्रम तथा पूँजी का अपव्यय कम होता है। क्योंकि विशिष्टीकरण से वे अपनी योग्यता, कुशलता, रुचि तथा लगन से कार्य करते हैं।

(2) भ्रष्टाचार पर रोक - संगठन निष्ठावान, ईमानदार, योग्य व मेहनती कर्मचारियों का विकास करता है। प्रत्येक व्यक्ति का कार्य बँटवारा होने से तथा उनके आधार पर मौद्रिक पारिश्रमिक तथा प्रेरणाओं के होने से भ्रष्टाचार नहीं पनपता है।

(3) सन्देशवाहन को सुविधाजनक बनाना - संगठन के अन्तर्गत सन्देशवाहन के मार्ग स्पष्ट रूप से तय होने के कारण सन्देशवाहन का आदान प्रदान आसानी से किया जाता है।

(4) समन्वय को सुविधाजनक बनाना - औपचारिक संरचना द्वारा विभिन्न विभागों, पदों तथा कार्यों को परस्पर जोड़ता है।

Scanned with CamScanner

(5) तकनीकी सुधारों का अनुकूलतम उपयोग सम्भव - नए तकनीकी विकास संगठन को बहुत अधिक प्रभावित करता है इन नए घटकों के ध्यान पर रखने के लिए सर्वोच्च प्रकार के संगठन प्रारूपों की जरूरत है। इससे संगठन नवीन शोध एवं अनुसंधानों के कारण विकसित हुए तकनीकी सुधारों में अनुकूलतम उपयोग को अवसर प्रदान करता है।

(6) विकास एवं विस्तार की व्यवस्था - संगठन में संस्था के विकास एवं विस्तार की व्यवस्था होनी चाहिए इसमें लोच भी होना चाहिए जिससे परिस्थितियों के अनुसार उसमें परिवर्तन किया जा सके।

(7) उद्देश्यों की प्राप्ति - संगठन किसी भी संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है वे संस्था की प्रगति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है।

(8) नियंत्रण की उचित सीमा - एक प्रबन्धक एक समय में कुछ सीमित अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्य का कुशलतापूर्वक नियंत्रण कर सकता है। कर्मचारियों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए।

(9) कर्तव्यों एवं दायित्वों का स्पष्ट आवंटन - प्रबन्धक, अधिकारी तथा पर्यवेक्षक कर्मचारी को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर उनके कर्तव्यों एवं दायित्वों को सौंपना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें अपने कार्य क्षेत्र तथा सीमाओं, उनके प्रति उत्तरदायी तथा उसके प्रति कौन उत्तरदायी है, इसके बारे में पूरी जानकारी होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(10) **प्रबन्धकीय कार्यकुशलता में वृद्धि** - संगठन विभागों, व्यक्तियों या समूहों द्वारा किये जानेवाले कार्यों को संयोजित करता है। वह उपलब्ध प्रयासों को श्रृंखलाबद्ध करके कुशल, व्यवस्थित तरीके से सम्पादित करता है। इस तरह संगठन काफी समय तक प्रबन्धकीय कार्यकुशलता तथा क्षमता में वृद्धि करता है।

इस प्रकार कुल मिलाकर संगठन उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों को अच्छी तरह से उपयोग करता है। प्रबन्धकीय कुशलता इन्हीं बातों पर निर्भर है कि प्रबन्ध किस तरह उपलब्ध संसाधनों के सहारे अधिकतम परिणाम प्राप्त कर सके।

इस तरह यह कहना सही है कि संगठन का प्रबन्ध में वही स्थान है जो मानव शरीर में हड्डियों का ढाँचा का। इसलिए हम कह सकते हैं कि संगठन प्रबन्ध का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

---- x ----